विचार बिन्दु

सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाए जाते हैं। –कौटिल्य अर्थशास्त्र

जब भी भूख से लड़ने कोई खड़ा हो जाता है, सुंदर दीखने लग जाता है!

जैसे-जैसे साल का यह समय नज़दीक आता है, मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगता है। कुछ-कुछ वैसी ही हालत होती है जैसी परीक्षा परिणाम आने के ठीक पहले हुआ करती थी। इस साम्य से यह बात भी याद आ रही है कि परीक्षा देने के बाद हम घर पर बड़े गर्व से बताया करते थे कि हमने खूब पढ़ाई की है और पर्चे बहुत अच्छे हुए हैं, इसलिए इस बार तो हमारा क्लास को टॉप करना पक्का है। लेकिन जब परीक्षा परिणाम आता तो हमारे सारे दावे फ़ुस्स हो जाते। इसके बाद शुरू होता परीक्षकों को कोसने का सिलसिला। आजकल मास्टर लोग कॉपियां ढंग से जांचते ही कहां हैं? बहुत सम्भव है कि जिस दिन वे हमारी कॉपी जांच रहे थे उस दिन उनकी अपने घर वालों से लड़ाई हो गई हो और सारा ग़ुसा हम पर निकाल दिया हो।। और ऐसी ही अनेक बातें। लेकिन ये बातें अब क्यों कर रहा हूं?

हाल में कंसर्न वर्ल्डवाइड, जर्मनी की एक सहायता एजेंसी वेल्ट हंगर हिल्फ और यूरोप के अग्रणी अकादमिक संस्थान इंस्टीट्यूट फॉर इण्टरनेशनल लॉ ऑफ पीस एण्ड आर्म्ड कॉन्फ्लिक्ट (IFHV) द्वारा एक सुविचारित प्रक्रिया के तहत तैयार की गई वैश्विक भूख सूचकांक रिपोर्ट (ग्लोबल हंगर इंडेक्स-जीएचआई) में जब यह बताया गया कि कुल 127 देशों की सूची में भारत का स्थान 105वां है, तो उपरोक्त प्रसंग अनायास याद आ गया। जब भी ऐसा कोई सर्वेक्षण या शोध या अध्ययन होता है और उसमें हमारा देश पिछड़ा हुआ पाया जाता है, हमारी सरकार या उसके समर्थक वह अध्ययन करने वालों की मंशा पर संदेह व्यक्त करते हुए उस अध्ययन को नकारते हैं। अगर सरकारी वक्तव्यों को एक साथ देखें तो लगता है जैसे सारी दुनिया हमारे विरुद्ध षड़यंत्र करने और हमें नीचा दिखाने में जुटी हुई है। हां, जब किसी सर्वेक्षण में या अन्यथा भी हमारी वाहवाही होती है तो हम ऐसा करने वालों की सराहना करते नहीं थकते हैं। मुझे यह बात भी बहुत रोचक लगती है कि हमारी सरकार के समर्थक यह कहते नहीं थकते हैं उनके नेता के नेतृत्व में पूरी दुनिया में देश का डंका बज रहा है, लेकिन वे यह नहीं बताते हैं कि उसी पूरी दुनिया से हमारी छवि को धूमिल करने वाली ऐसी रिपोर्ट्स क्यों और कैसे आती हैं? वैसे यह मानव स्वभाव ही है जिसे हमारे लोक में मीठा-मीठा गप्प और कड़वा-कड़वा थू कहा जाता है।

ग्लोबल हंगर इंडेक्स सन् 2006 से नियमित रूप से ज़ारी होता है और अपने 19वें साल की इस 2024 की रिपोर्ट में उसने कुल 136 देशों के डेटा का अध्ययन किया है। इस डेटा के अध्ययन के बाद इन संस्थाओं ने पाया कि इनमें से 127 देशों के 2019 से 202 तक के डेटा इतने मुकम्मिल हैं कि उनके आधार पर इनका वैश्विक भूख सूचकांक प्राप्त किया जा सकता है। शेष 9 देशों के पर्याप्त डेटा उपलब्ध नहीं थे, इसलिए उन्हें छोड़ दिया गया। यह सूचकांक प्राप्त करने के लिए जो डेटा प्रयुक्त किया गया उसकी विश्वसनीयता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रकाशित स्त्रोतों से लिया गया है। ये स्त्रोत हैं संयुक्त राष्ट्र संघ का खाद्य एवं कृषि संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनीसेफ़, और संयुक्त राष्ट्र संघ का बाल मृत्यु आकलन विषयक अंतर-अभिकरण समूह। इनके अलावा विश्व बैंक, और जनसांख्यिकी और स्वास्थ्य सर्वेक्षण कार्यक्रम भी इसमें शामिल रहे।

यह सूचकांक चार मुख्य संकेतकों को मिलाकर तैयार किए गए एक फॉर्मूला के आधार पर भूख की बहु आयामी प्रकृति की पड़ताल करता है। ये चार मुख्य संकेतक हैं अल्पपोषण अर्थात अपर्याप्त कैलोरी प्राप्त कर सकना, पांच वर्ष से कम की आयु के वे बच्चे जो क्रॉनिक अल्पपोषण के शिकार हैं और इस कारण जिनकी लम्बाई उनकी उम्र के हिसाब से कम है, पांच वर्ष से कम आयु के वे बच्चे जिनका वजन उनकी ऊंचाई के हिसाब से कम है और जो अत्यधिक अल्पपोषण के शिकार हैं, और पांच वर्ष के कम आयु वाले बच्चों की बाल मृत्यु दर। इन चार संकेतकों के आधार पर प्रत्येक देश के लिए एक सौ बिंदु के पैमाने पर वैश्विक भूख सूचकांक की गणना की जाती है। शून्य स्कोर का आशय है जहां भूख शून्य है और जैसे-जैसे यह स्कोर बढ़ता जाता है, भूख की गम्भीरता प्रदर्शित होती है। दस बिंदु से कम वाले देश कम भूख वाले माने जाते हैं, 10 से 19.9 बिंदु तक वाले देश मध्यम भूख वाले, 20 से 34.9 बिंदु वाले देश गम्भीर भूख वाले, 35 से 49.9 वाले ख़तरनाक भूख वाले और 50 से ज़्यादा बिंदु वाले देश अत्यधिक खतरनाक भूख वाले देश माने जाते हैं। इस पैमाने पर हमारा देश सन् 2024 के सूचकांक में 27.3 बिन्दु (गम्भीर भूख) प्राप्त कर 105 वें स्थान पर है। इस गम्भीर भूख वर्ग में दुनिया के 42 देश शामिल हैं। यहीं यह बात भी ग़ौर तलब है कि इस सूचकांक के अनुसार हमने अपनी स्थित लगातार सुधारी है। सन 2000 में हमारे पास 38.4, 2008 में 35.2 और 2016 में 29.3 बिंदु थे। इस सूचकांक के अनुसार भारत की 13.7 प्रतिशत आबादी कुपोषित है। इसमें से पांच वर्ष से कम आयु के 35.5 प्रतिशत बच्चों की लम्बाई कम है, 18.7 प्रतिशत बच्चे कमज़ोर हैं और 2.9 प्रतिशत बच्चे अपने पांचवें जन्म दिन से पहले ही यह दुनिया छोड़ जाते हैं।

इस साल के सूचकांक में एक बहुत महत्व की बात यह कही गई है कि सारी दुनिया के लिए वैश्विक भूख सूचकांक 18.3 है, जिसे मॉडरेट अर्थात मध्यम भूख वाला माना जाता है। मतलब यह कि औसतन पूरी दुनिया ही भूख के लिहाज़ से संतोषजनक हालत में नहीं है। हम इस बात से बहुत खुश नहीं हो सकते कि 2016 की तुलना में, जब यह स्कोर 18.8 था, हम बहुत थोड़ा ही बेहतर कर सके हैं।

यह चर्चा बेमानी होगी कि इस सूचकांक में कौन-कौन से देश हमसे बेहतर और कौन कौन से देश बदतर स्थिति में हैं, हालांकि समाचार माध्यमों में इस तरह से भी चर्चा होती रहती है। मुझे लगता है कि इस तरह की चर्चा हमारा ध्यान भटकाती है। अरे, वह देश तो हमसे भी ज़्यादा बुरी स्थिति में है, फिर उसका स्कोर हमसे बेहतर कैसे हो सकता है? ज़रूर इस आकलन में कोई गड़बड़ हुई है। इसलिए वह बात न की जाए तो अच्छा होगा।

इसकी बजाय मैं एक अन्य मुद्दे पर बात करना ज़रूरी समझ रहा हूं। इस साल के सूचकांक में एक बहुत महत्व की बात यह कही गई है कि सारी दुनिया के लिए वैश्विक भूख सूचकांक 18.3 है, जिसे मॉडरेट अर्थात मध्यम भूख वाला माना जाता है। मतलब यह कि औसतन पूरी दुनिया ही भूख के लिहाज़ से संतोषजनक हालत में नहीं है। हम इस बात से बहुत खुश नहीं हो सकते कि 2016 की तुलना में, जब यह स्कोर 18.8 था, हम बहुत थोड़ा ही बेहतर कर सके हैं। इस सूचकांक में बहुत व्यथा के साथ यह बात कही गई है कि सन् 2030 तक पूरी दुनिया को भूख मुक्त कर देने का जो लक्ष सामने रखा गया था, वह अब पूरा होता नज़र नहीं आ रहा है। असल में इस सूचकांक में तो और गम्भीर और हताश कर देने वाली बात कही गई है, और वह यह कि वर्तमान रुझान को देखते हुए सन् 2160 तक अर्थात लगभग सवा सौ साल के बाद भी दुनिया कम भूख वाली स्थिति में ही आ सकेगी। पूर्ण भूख मुक्ति तब भी नहीं हो सकेगी।

बात केवल भारत की ही नहीं है, सारी दुनिया की है। इस सूचकांक के साथ प्रकाशित सामग्री में इस बात की तरफ ध्यान आकर्षित किया गया है कि लैंगिक असमानता, खाद्य असुरक्षा और जलवायु परिवर्तन भूख के सबसे बड़े कारक हैं। यह बात भी ध्यातव्य है कि ये तीनों कारक परस्पर सम्बद्ध हैं। खाद्यअसुरक्षा और जलवायु परिवर्तन का सबसे ज़्यादा कुप्रभाव बच्चियों, लड़कियों और स्त्रियों पर पड़ता है। उन्हें हर तरह के भेदभाव का सामना करना पड़ता है और इसका सीधा सर उनके पोषण पर पड़ता है।

इस सूचकांक में वर्तमान स्थिति को बदलने के लिए तीन बड़ी अनुशंसाएं की गई हैं। ये हैं: 1. पर्याप्त भोजन के अधिकार से सम्बद्ध अंतर्राष्ट्रीय कानून की जवाबदेही को सुदृढ़ किया जाए। सरकारें अपने विधिक दायित्व का निर्वहन करें, वे भोजन के अधिकार को सुनिश्चित करें और विभिन्न तरीकों से इसे प्रभावी करें। 2. भोजन व्यवस्था और जलवायु नीतियों और कार्यक्रमों में लैंगिक रूपांतरण विषयक सोच को प्रोत्साहित करें। इसके लिए विभिन्न मंचों पर महिलाओं की अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाए। नीति निर्माता कानूनों और नीतियों के निर्माण व उन्हें लागू करने के मामलों में लैंगिक समानता पर ध्यान दें। 3. सरकारें अपने वित्तीय साधनों का इस तरह पुनर्नियोजन करें जिससे ढांचागत भेदभाव कम हो और स्थिति बेहतर हो।

मुझे लगता है कि बजाय इस तरह के आकलनों को नकारने के हमारा सारा बल इस बात पर होना चाहिए कि जैसे भी हो स्थिति बेहतर हो। असल में स्थिति को नकारना समस्या से आंख मूंद लेना है, और ऐसा करना किसी के भी हित में नहीं होगा। यह स्थिति मुझे सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की एक कविता 'भूख' की याद दिला रही है। कविता है– **जब भी/ भूख से लड़ने/ कोई खड़ा हो जाता है/ सुंदर दिखने लगता है।/ झपट्ता बाज़/ फन उठाएं सांप/ दो पैरों पर खड़ी/ कांटो से नन्हीं पत्तियां खाती बकरी,/ दबे पांव झाड़ियों में चलता चीता,/ डाल पर उल्टा लटक/ फल कुतरता तोता,/ या इन सब की जगह/ आदमी होता।/ जब भी/ भूख से लड़ने/ कोई खड़ा हो जाता है/ सुंदर दिखने लगता है।**

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

आज की महिला : मातृत्व का बोझ एवं भावनात्मक संघर्ष

डॉ. रामावतार शर्मा

मातृत्व एक महिला के लिए जीवन पलटनेवाला अनुभव होता है जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक परिवर्तनों की एक पूरी श्रृंखला होती है। यह सब सदा से होता रहा है पर अब बदलते समय के साथ मातृत्व की मनोवैज्ञानिक परिस्थितियां तथा भावनात्मक मांगें अत्यधिक जटिल हो गई हैं। आज शहरी जीवन में एक विशेष किस्म की जीवनशैली उभर कर सामने आ गई है जिसमें सामाजिक जीवन नगण्य-सा होता जा रहा है तथा बड़ा पारिवारिक जीवन तो है ही नहीं। ऐसे में सामान्यतया हर युवती को मातृत्व का बोझ अकेले ही ढोना पड़ता है। प्रसवोत्तर काल के प्रारंभिक चंद सप्ताह तक सास या स्वयं की माता का थोड़ा बहुत सहारा मिलने के बाद बच्चे के लालन पालन का सारा भार माता पर ही आता है। यह एक विकट समस्या है जिसका निवारण फिलहाल सामने नजर नहीं आता है। भारतीय समाज में पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस (अभिघात जन्य तनाव) को लेकर कोई ज्यादा जन जागरूकता नहीं है इसलिए हम किसी कष्टमय स्थिति से गुजरने वाले व्यक्ति की मन:स्थिति को लेकर तर्कसंगत रूप से संवेदनशील नहीं हैं और यदि हों तो भी उस व्यक्ति को कुछ राहत देने में अधिक सक्षम नहीं है। प्रसव एक बड़े शारीरिक कष्ट और पीड़ा की स्थिति होती है जिसमें भावनात्मक स्तर पर भी एक महिला को अकेले ही जूझना पड़ता है। प्रसव पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस का एक महत्वपूर्ण कारण होता है।

कोई भी अल्पकालिक तनाव तो भागो या सामना करो के सिद्धांत पर टिका हुआ होता है तथा हमारा मन और शरीर उस बारे में संघर्ष करने को प्रकृति द्वारा सक्षम होता है परंतु यदि तनाव दीर्घकालिक हो जाए तो यह मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और आर्थिक स्वास्थ्य सभी के लिए हानिकारक होता है। आज की महिला एक कामकाजी व्यक्ति है। उसे घर संभालना है, बच्चों की परवरिश और शिक्षा पर ध्यान देना है, अपने कार्य क्षेत्र में टिके रहना और आगे बढ़ना है और परिवार के साथ सामंजस्य बनाए रखना है। इतने मोर्चों पर एक साथ तालमेल बिठाना एक अत्यंत कठिन कार्य होता है जिसके बारे में उसे कभी भी प्रशिक्षित नहीं किया गया है। ऊपर से हमारे समाज में व्यावहारिक एवं व्यक्तिगत संवाद की बड़ी कमी है और अधिकतर मामलों में आलोचना और आरोप प्रत्यारोप का ही बोलबाला रहता है। ऊपर से मोबाइल फोन के दुरुपयोग से नव वधू हो या फिर वर्षों से विवाहित महिला हो, उसका अपने मायके से अत्यधिक संपर्क रहने लगा है। इसके फलस्वरूप उसका अपने ससुराल पक्ष से लगाव व जुड़ाव मजबूत नहीं हो पाता है। ऐसा होने के कारण घरों में हर समय तनाव की स्थिति बनी रहती है जो सभी के लिए हानिकारक है परंतु अहंकारवश कोई भी पक्ष संवाद के लिए तैयार नहीं होता है।

किसी भी तनाव पूर्ण स्थिति का मुकाबला करना और समाधान प्राप्त करना इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति विशेष की नजर में किसी रिश्ते की कीमत क्या है, उसमें आत्मविश्वास कितना है। इन बातों के अलावा व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक दृढ़ता का भी किसी स्थिति से निबटने में बड़ा महत्व होता है। ऐसा न होने की स्थिति में पीड़ित व्यक्ति स्वयं भी एक तरह से सामने वाले को प्रताड़ित करने वाला बन जाता है और पूरा परिवार आपसी प्रताड़ना का विध्वंसकारी खेल खेलने लगता है जहां जीवन बड़ा कष्टकारी हो जाता है। ऐसा सब कुछ उन परिवारों में होता रहता है जो बाहरी तौर पर अच्छे खासे सुखी एवम् समृद्ध नजर आते हैं।

शोधकर्ताओं में इस बात पर भी सहमति नहीं बन पाई है कि एक बालक और बालिका का पालन पोषण अलग अलग तरीके से करना चाहिए या नहीं। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय, अमेरिका के डॉक्टर नीरव शाह के अनुसार सर्वाइवल (उत्तरजीविता), प्रसार (प्रोपेगेशन), प्रजनन और स्वयं के अस्तित्व के लिए नारी मस्तिष्क एवम् व्यवहार में कुछ जन्मजात विभिन्नताएं होती हैं इसलिए एक बालिका और एक बालक के पालन और प्रशिक्षण में अलग अलग नीति अपनानी चाहिए। अधिकतर अध्ययन इंगित करते हैं कि बालिका का प्रशिक्षण किसी महिला और बालक का पुरुष द्वारा होना चाहिए जिसमें माता-पिता या परिवार का कोई अन्य निकट का सदस्य हो सकता है। चंद आपत्तियों के बावजूद यह निष्कर्ष एक बेहतर दृष्टिकोण है कि एक बालक और एक बालिका का पालन पोषण और प्रशिक्षण उनके लिंगानुसार किया जाए ताकि प्रकृति प्रदत्त विशेषताओं को अधिक विकसित होने का अवसर मिले। इस तरह के प्रशिक्षण का अभाव आगे चलकर स्त्री के लिए मातृत्व को एक बोझ बना देता है और जीवन को भावनात्मक संघर्ष में बदल देता है। पारिवारिक संघर्ष विश्व का सबसे बड़ा अदृश्य महायुद्ध है।

–डॉ रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

बीकानेर के क्ले से मोरबी में सालाना 50 हजार करोड़ का सिरेमिक कारोबार

अगर राजस्थान सरकार कोलायत में ही सिरेमिक इकाईयां लगाने के लिए सस्ता फ्यूल और व्यापारियों को सहयोग करे तो यहां गुजरात के मोरबी से बड़ा हब बन सकता है

- **कोलायत तहसील के क्ले को 400 रुपए टन लेकर मोरबी में 20 हजार रुपए टन के सिरेमिक उत्पाद बेचे जा रहे हैं**
- **देशभर में मौजूद क्ले का करीब 70 प्रतिशत भंडार बीकानेर के कोलायत में है और खान एवं भूविज्ञान विभाग ने यहां 210 खनन पट्टे जारी कर रखे हैं**

बीकानेर, (निसं)। जिले की कोलायत तहसील में बाल क्ले का भंडार है, जिस पर आधारित 1000 से ज्यादा इकाईयां लगाकर गुजरात का मोरबी जिला सिरेमिक हब बना है। बीकानेर की क्ले से मोरबी में हर साल 50 हजार करोड़ रुपए का सिरेमिक उत्पादों का कारोबार हो रहा है। यहां की क्ले 400 रुपए टन लेकर मोरबी में 20 हजार रुपए टन के सिरेमिक उत्पाद बेचे जा रहे हैं। अगर राजस्थान सरकार कोलायत में ही सिरेमिक इकाईयां लगाने के लिए सस्ता फ्यूल और व्यापारियों को सहयोग करे तो यहां गुजरात के मोरबी से बड़ा हब बन सकता है।

देशभर में मौजूद क्ले का करीब 70 प्रतिशत भंडार बीकानेर के कोलायत में है और खान एवं भूविज्ञान विभाग ने यहां 210 खनन पट्टे जारी कर रखे हैं। हर साल क्ले की खानों में 31 लाख टन क्ले का उत्पदान होता है जिसका 98 प्रतिशत दूसरे राज्यों में निर्यात होता है। सबसे ज्यादा क्ले गुजरात के मोरबी में जाती है जो बीकानेर की क्ले के कारण ही सिरेमिक का हब बना हुआ है।

वहां 1000 से ज्यादा इकाईयां है जिनमें बीकानेर की क्ले से सिरेमिक उत्पाद तैयार किए जाते हैं। इन इकाईयों में 50 हजार करोड़ रुपए का पूंजी निवेश किया गया है और करीब 30 हजार श्रमिक हर साल 50 हजार करोड़ रुपए के सिरेमिक उत्पाद तैयार करते हैं।

गुजरात 15 हजार करोड़ रुपए के उत्पदों का निर्यात करता है। गुजरात में सिरेमिक उद्योग से हर साल वहां की सरकार और केन्द्र को 10,000 करोड़ रुपए का वार्षिक कर मिल रहा है। इतना ही नहीं, सिरेमिक उद्योग से जुड़ी सहायक इकाईयों जैसे गत्ते के डिब्बे बनाना, डिजाइन स्टूडियो, मशीनरी उत्पादन, ट्रांसपोर्टेशन आदि की गणना की जाए तो यह आंकड़ा और बढ़ जाएगा।

यह सब बीकानेर की क्ले पर आधारित कारोबार है और मोरबी को हब बनाने में सबसे बड़ा कारण है वहां के व्यापारियों को ईंधन के रूप में गैस उपलब्ध कराना। राजस्थान सरकार अगर इसकी गंभीरता को समझे और कोलायत में व्यापारियों को सस्ते फ्यूल यानी गैस उपलब्ध करा दे तो यहां बड़े-बड़े उद्योग घराने इन्वेस्ट करेंगे और कोलायत तहसील मोरबी से भी बड़ा सिरेमिक हब बन जाएगा।

यह बीकानेर में के व्यापारियों की दो दशकों पुरानी मांग भी है, लेकिन राज्य में भाजपा और कांग्रेस दोनों दलों की सरकारों और स्थानीय मंत्री, नेताओं ने इसे कभी गंभीरता से नहीं लिया है। वर्तमान में नई भाजपा सरकार ने अपने पहले बजट में बीकानेर में सिरेमिक सेंटर की स्थापना की घोषणा की है जिससे यहां के उद्यमियों और जनता को उम्मीदें जगी हैं। विश्व में भारत सिरेमिक टाइल्स बनाने में तीसरे स्थान पर है। देश में औसतन 400 करोड़ वर्ग मीटर सिरेमिक टाइल्स का उत्पादन हो रहा है और इसमें से 70 प्रतिशत उत्पादन बीकानेर की क्ले से मोरबी में हो रहा है। भारत में प्रति व्यक्ति टाइल्स की खपत लगभग एक वर्ग मी. प्रति वर्ष है जो कि ब्राजील, चाइना, वियतनाम आदि देशों की तुलना में बहुत कम है। वहां की वार्षिक खपत 4 से 6 वर्ग मी. है।

केन्द्र सरकार की सबके लिए आवास, स्वच्छ भारत, सस्ते मकान जैसी नीतियों को देखते हुए आने वाले समय में सिरेमिक टाइल्स की मांग 15 प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ने का अनुमान है। बीकानेर क्ले के कारण इसमें सबसे बड़ी भूमिका निभा सकता है और यहां आर्थिक सामाजिक परिदृश्य बदल सकता है। राजस्थान सरकार स्थानीय और अन्य राज्यों के सिरेमिक उद्यमियों को विश्वास में लेकर प्रभावी कदम उठाए तो बीकानेर भारत में ही नहीं, विश्व में सिरेमिक का केन्द्र बन सकता है। इसके लिए एक नीति बनाकर अल्पकालीन और दीर्घकालीन लक्ष्य निर्धारित करना जरूरी हैं।

बीकानेर के गजनेर इंडस्ट्रियल एरिया के सिरेमिक जोन में 25 हेक्टेयर के भूखंड रिजर्व किए जाएं। रियायती दरों पर बड़े साइज, 180 मी. गुना 450 मी. के भूखंड उपलब्ध कराए जाएं। उद्यमियों के रूपांतरित भूखंडों पर प्रस्तावित इकाईयों के लिए बिजली-पानी की उपलब्धता सुनिश्चित हो। वर्तमान उद्योगों के पास ही उपलब्ध सरकारी, बंजर जमीन रियायती दर पर आवंटित की जाए। गैस सप्लाई कंपनियों बीपीएल, एलओसी आदि से जैसलमेर में उपलब्ध गैस पाइप लाइन से सिरेमिक इकाईयों को उचित मूल्य पर गैस उपलब्ध कराई जाए। वर्तमान में राजस्थान में विद्युत दर गुजरात से 25 प्रतिशत ज्यादा है।

राजस्थान सरकार इस पर विचार कर सिरेमिक जोन में समयबद्ध तरीके से दरें कम करते हुए बिजली की उपलब्धता तय करें। सिरेमिक उद्योग रोजगारोन्मुखी है। टाइल्स आम आदमी के उपयोग की वस्तु है। टाइल्स पर जीएसटी वर्तमान रेट 18 प्रतिशत से कम कर 12 प्रतिशत तक करना चाहिए। वर्तमान में निवेशकों में असुरक्षा का माहौल है। बार-बार बदल रही कर नीति, पर्यावरण स्वीकृति की जटिलता, पेट्रोलियम पदार्थों का जीएसटी में नहीं लाना। अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग बिजली पेट्रोलियम पदार्थ दर उद्योग में निजी निवेश को हतोत्साहित करती है। सिंगल विंडो प्रकोष्ठ बनाया जाना चाहिए जिसका मुख्यालय बीकानेर में हो, ताकी प्रस्तावित सिरेमिक उद्योग को भूमि रूपांतरण, बिजली कनेक्शन, पर्यावरण संबंधी अनापत्ति व अन्य प्रकार की स्वीकृतियां समयबद्ध तरीके से दिलाई जा सके।

राजस्थान इंटरनेशनल फोक फेस्टिवल "रिफ"का समापन

जोधपुर, (कास)। जोधपुर राजस्थान इंटरनेशनल फोक फेस्टिवल के 17वें संस्करण का रविवार सुबह समापन हुआ। 5:30 बजे कबीर गायन के साथ सफेद संगमरमरी इमारत जसवंतथड़ा के आहते में निर्गुणी कविता व भजन की धुनों से सुफियाना फिजां में देसी- विदेशी मेहमानों ने रुहानियत महसूस की। रिफ रसल में देसी-विदेशी 31 कलाकारों की जुगलबंदी ने मन मोहा।

रिफ डॉन में पद्मश्री कालूराम बामणिया द्वारा कबीर, बुलेशाह, मीराबाई के रुहानी भजनों की प्रस्तुति दी। इसके साथ ही 17वें सीजन का समापन हुआ। इससे पहले शनिवार मिड नाईट में रात दो बजे रिफ रसल में मेहरानगढ़ की जनाना कोर्टयार्ड में 31 कलाकारों ने एक साथ प्रस्तुति दी। लंगा मांगणियार ने अलाप लगाकर लोक गीज घूमर से कार्यक्रम की शुरुआत की, सिंधी सारंगी, खड़ताल व ढोल की धुन में देर रात कोर्टयार्ड में बैठे दर्शकों के रगों में जोश भर दिया। रसलर गिरधर उडूपा ने राजस्थानी कलाकारों के साथ विदेशी कलाकारों की जुगलबंदी से हर कोई झूम उठा। सोना महापात्रा ने लंगा बैंड साज के साथ बादली, हिचकी आदि सॉन्ग की प्रस्तुति दी।

खड़ताल के साथ एली मिलर का कांगो, कोरियन ठो बाय सिल्वर बैंड, यूरोप का पूलूप बैंड की जुगलबंदी ने जो समां बांधा। देर रात डेढ़ घंटे चले इस कार्यक्रम में हर कोई संगीत की इस जुगलबंदी में मंत्र मुग्ध नजर आया। जनाना कोर्टयार्ड के मंच पर जैसे ही सिंगर सोना महापात्रा ने एंट्री ली और आई गिरी नंदनी... गाया तो लोगों ने जमकर तालियों से स्वागत किया।

एक घंटे की प्रस्तुति में सोना महापात्रा ने ओडिसा के फोक सोंग के अलावा आसाम व बंगाली फोक सोंग की प्रस्तुति दी। महापात्रा ने अपने नए एलबम बादली का सोंग भी लंगा कलाकारों के साथ गाया। क्लासिकल, पॉप व फोक सिंगर, कंपोजर, लिरीसिस्ट महापात्रा ने अपनी कला के सभी आयाम की बेहतरीन प्रस्तुति दी।

कश्मीर से आये युवाओं ने सैंड आर्ट कार्यशाला देखी

युवाओं ने पुष्कर भ्रमण किया और पौराणिक महत्व जाना

पुष्कर, (निसं.)। भारत सरकार के युवा मंत्रालय के द्वारा नेहरू युवा केंद्र के माध्यम से "वतन को जानो कार्यक्रम" के तहत कश्मीर से आये युवाओं को सैंड आर्ट कार्यशाला को दिखाया गया।

इस दौरान सेंड आर्ट के कलाकार अजय रावत ने सैंड आर्ट की बारीकियों को बताया। इस अवसर पर नेहरू युवा केंद्र के ज़िला समन्वयक जयेश कुमार भी उपस्थित थे। कश्मीर से कुल 162 युवा पिछले एक सप्ताह से अजमेर में ठहरे हुये हैं और आसपास के पौराणिक स्थलों का भ्रमण कर रहे है और उनके बारे में जानकारी ले हैं। वहीं ब्रह्मा मंदिर और पुष्कर सरोवर के बारे में भी युवाओं को इनका महत्व बताया गया।

राशिफल

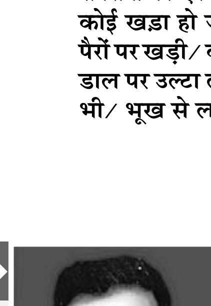

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 21 अक्टूबर, 2024

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, रोहिणी नक्षत्र प्रात: 6:50 तक, वारियान योग दिन 11:11 तक, कौलव करण दिन 3:24 तक, चन्द्रमा आज सायं 6:15 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मिथुन, बुध-तुला, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

कुमार योग सूर्योदय से प्रात: 6:50 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग मंगलवार प्रात: 5:51 तक है। अमृत सिद्धि योग प्रात: 6:50 से रात्रि 2:30 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:58 तक, शुभ 9:23 से 10:47 तक, चर 1:36 से 3:00 तक, लाभ-अमृत 3:00 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:34, सूर्यास्त 5:49

मेष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिव कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिव कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
व्यावसायिव कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय बना रहेगा। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिव कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

कर्क
आर्थिक/वित्तिय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिव कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कुंभ
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।